भूगोल में स्थान की संकल्पना
Concept of space in geography

Module -1

Semester 1

Introduction परिचय

भूगोल में स्थान की संकल्पना सबसे प्राचीन है इसके अंतर्गत हम भूपटल पर विभिन्न घटनाओं के बारे में अध्ययन करते हैं और इस अध्ययन में घटना की अध्ययन में अवस्थिति(Location) का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि एक स्थान से दूसरे स्थान पर घटित होने वाली घटनाओं में भिन्नता पाई जाती है तथा उनमें अंतर दिखाने के लिए हमें भूगोल में स्थान की संकल्पना की जानकारी होना अति आवश्यक है| इसके अलावा पृथ्वी की सतह पर भौतिक तथा सांस्कृतिक तथ्यों के स्वरूपों में क्षेत्रीय विभिनता देखने को मिलता है इसी कारण भूगोल को क्षेत्रीय भिन्नताओं का अध्ययन करने वाला विज्ञान या स्थानों का विज्ञान माना जाता है|

- इसी आधार पर जर्मन भूगोलवेत्ता ने भूगोल में क्षेत्रीय विभेदीकरण की संकल्पना का प्रतिपादन किया यही कारण है की भूगोल में स्थानों की संकल्पना को क्षेत्रीय विभेदीकरण की संकल्पना भी कहा जाता है।

क्षेत्रीय विभेदीकरण की संकल्पना

भूगोल में क्षेत्रीय विभेदीकरण की संकल्पना भूगोल की प्रमुख संकल्पनाओं में से एक है। सर्वप्रथम जर्मन भूगोलवेत्ता हेटनर (1905) ने अपने लेख में क्षेत्रीय भिन्नता की संकल्पना का स्पष्टीकरण किया था। उन्होंने भूगोल को क्षेत्रीय विज्ञान (Chorological sciene) माना और बताया कि 'भूगोल पृथ्वी के क्षेत्रों का अध्ययन है और ये क्षेत्र एक दूसरे से भिन्न होते हैं।' क्षेत्रीय भिन्नता का अभिप्राय यह है कि भौतिक तथ्यों उच्चावच, जलवायु, जलाशय, मिट्टी एवं खनिज, वनस्पति, पशुजीवन आदि और सांस्कृतिक तथ्यों- जनसंख्या, कृषि, खनन, उदयोग व्यापार, परिवहन साधनों, गृह तथा बस्तियों आदि के वितरण में विषमता और भिन्नता पायी जाती है। पृथ्वी के किसी भी दो क्षेत्र की धरातलीय बनावट बिल्कुल एक जैसी नहीं है।

स्थानों या क्षेत्रीय विभेदीकरण संकल्पना की आलोचना

भूगोल में क्षेत्रीय विभेदीकरण की संकल्पना को मुख्यता दो आलोचनाओं का सामना करना पड़ा।

1. अनेक भूगोल नेताओं ने भूगोल में क्षेत्रीय विभेदीकरण की संकल्पनाकी आलोचना करते हुए यह कहा कि विभेदीकरण का अर्थ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र की भी नेताओं को स्पष्ट करना होता है जो भूगोल के क्षेत्र या उद्देश्य को सीमित करता है क्योंकि किसी दो क्षेत्रों में भिन्नता के अलावा बहुत से समानता भी पाए जाते हैं जिसका अध्ययन भी भूगोल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
2. दूसरी आलोचना में हेटनर द्वारा प्रतिपादित क्षेत्रीय विभेदीकरणकी संकल्पना भूगोल को एक अलग वाह विशिष्ट विज्ञान का स्वरूप देने में असफल रही है क्योंकि भूगोल के अलावा अन्य क्षेत्रीय विज्ञान में क्षेत्रीय नेताओं का अध्ययन किया जाता है।

इन आलोचनाओं को ध्यान में रखते हुए हार्टसन महोदय ने भूगोल की क्षेत्रीय विभेदीकरण की परिभाषा में बदलाव करते हुए नए परिभाषा दी

"भूगोल पृथ्वी के धरातल की परिवर्तनशील प्रकृति का यथार्थ क्रमबद्ध तार्किक वर्णन व व्याख्या प्रस्तुत करता है।"

आज अधिकांश भूगोलवेत्ता हाटसन की परिभाषा को अधिक मान्यता प्रदान करते हैं।

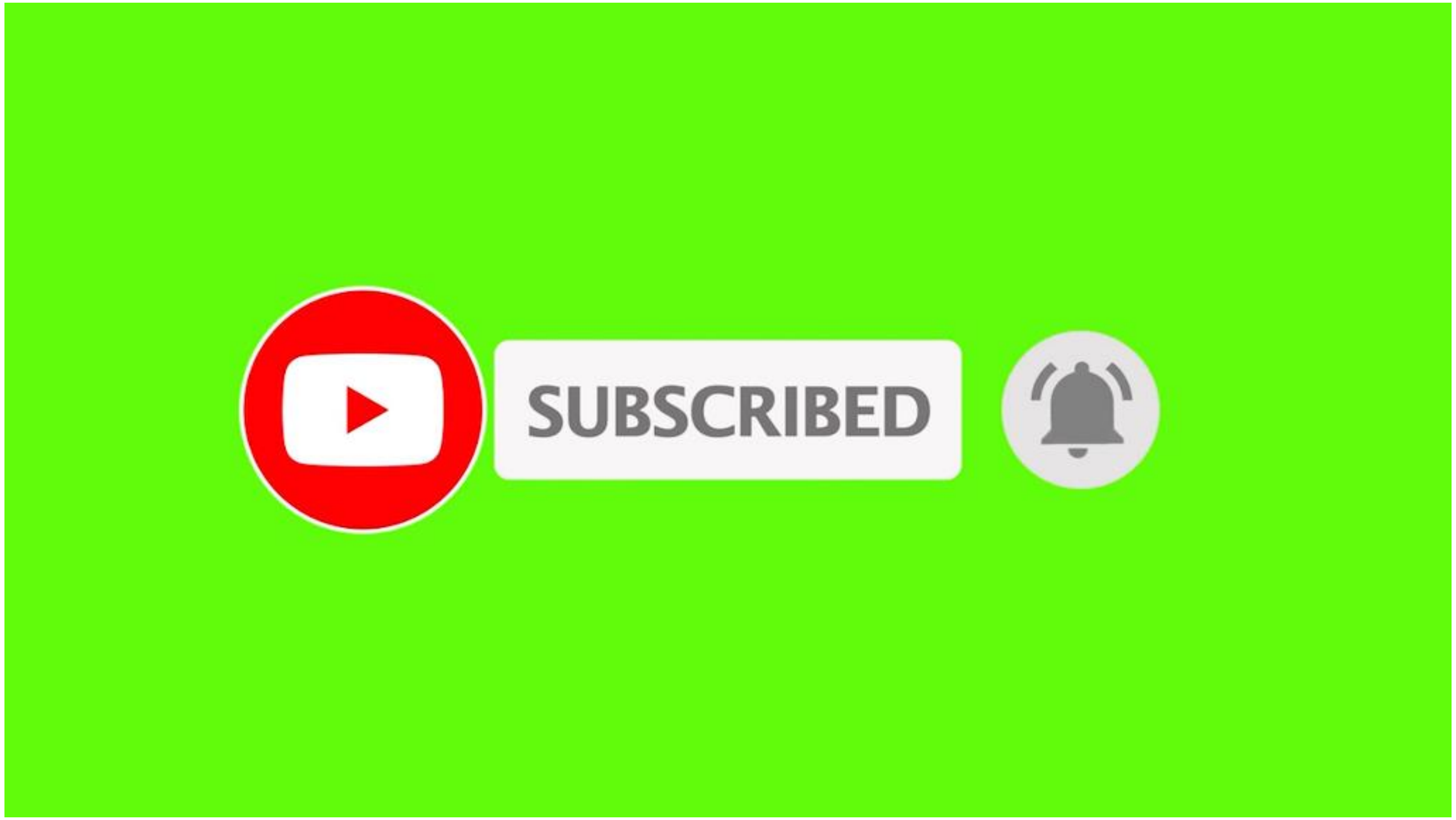
SUBSCRIBED